



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (II)
PART II—Section 3—Sub-Section (II)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 545]

नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 15, 1993/ भाद्र 24, 1915

No. 545] NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 15, 1993/BHADRA 24, 1915

वित्त मंत्रालय
(राजस्व विभाग)
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

अधिलेखना
नई दिल्ली 15 सितम्बर, 1993
ब्याज-कर

का.प्रा. 685(अ)—केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, ब्याज कर अधि-
नियम, 1974 (1974 का 45) की धारा 27 द्वारा प्रदत्त शक्तियों
का प्रयोग करते हुए, ब्याज-कर नियम, 1974 का और संशोधन करने
के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है अर्थात् :-

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम ब्याज-कर (संशोधन) नियम,
1993 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. ब्याज-कर नियम, 1974 के परिशिष्ट में—

(क) विद्यमान प्रारूप सं. 1 के स्थान पर निम्नलिखित प्रारूप
रखा जाएगा, अर्थात् :-

प्रारूप सं० 1

ब्याज-कर
प्रभावे ब्याज की विवरणी

ब्याज-कर अधिनियम, 1974
की धारा 7 और ब्याज-कर
नियम, 1974 का नियम 3
देखिए

आयकर कार्यालय में प्रयोग के
लिए

नाम और कार्यालय का पता
स्पष्ट शब्दों में

स्थायी लेखा संख्यांक

टेलीफोन

वार्ड/सर्किल/विशेष रेंज जहाँ
निर्धारण किया गया/निर्धारणीय

निर्धारण वर्ष

क्या यह पुनरीक्षित विवरणी है। यदि है, तो पूर्व विवरणी की रसीद सं. और तारीख कथित करें।

कथन करें कि निवासी है या प्रतिवासी

भाग-1 प्रभार्य ब्याज का विवरण :

1. भारत में दिए गए उधारों और अधिमों पर ब्याज [टिप्पण के क्रम सं. 7 (i) और (ii) देखिए] र. -----
2. कम करें: ब्याज जो दृक्कृत ऋण सावित हो गया है [टिप्पण के क्रम सं. 7 (iii) देखिए] र. -----
3. प्रभार्य ब्याज (1-2) र. -----
4. प्रभार्य ब्याज जो दस गण, के निकटतम गुणज तक पूर्णांकित किया गया है (आयकर अधिनियम की धारा 288 क जैसी यह ब्याज-कर अधिनियम की धारा 21 को लागू है) र. -----

भाग-2 ब्याज कर का विवरण :

1. प्रभार्य ब्याज पर कर र. -----
2. जोड़िए
(क) विवरणी को बिलम्ब से फाइल करने के लिए ब्याज (धारा 12)
(ख) अधिम कर के संवाय में व्यति क्रम के लिए ब्याज (धारा 12क)
(ग) अधिम कर संदाय के आस्थायन के लिए ब्याज (धारा 12ख) र. -----
3. संवेय कुल कर और ब्याज (1+2) र. -----
4. संदेय अधिम कर : र. -----

रकम (र.) पहली किस्त दूसरी किस्त तृतीय किस्त योग तारीख

5. स्वतः निर्धारण पर कर
संदाय की तारीख ब्याज कर (र.) उपरोक्त क्रम सं. 2 से ब्याज योग (र.)
6. संदेय कुल कर और ब्याज (4-5) से ब्याज र. -----
7. संदेय या प्रतिदेय कर/ब्याज (3-6) र. -----

भाग 3—अन्य राशियों जो प्रभार्य ब्याज में सम्मिलित नहीं की गई हैं और जिनके करावेय न होने का दावा किया गया है।

विशिष्टियां रकम (र.) किस कारण से वे करावेय नहीं है

सत्यापन

मैं----- जो
(पूरा नाम स्पष्ट अक्षरों में)

जो----- का पुत्र/पुत्री/पत्नी हैं
(प्रत्यक्ष संस्था का नाम) की हैं
(पदाभिधान)

मृत्युनिष्ठा से घोषणा करता/करती हूं कि मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास में इस विवरणी और इसके साथ लगाए गए विवरण में दी गई सूचना सही और पूर्ण है और यह कि प्रभार्य ब्याज की रकम तथा उसमें दक्षित अन्य विशिष्टियां सही तौर कथित की गई है और 1 अप्रैल, 19 को प्रारम्भ होने वाले निर्धारण वर्ष से गुप्तगत पूर्व से संबंधित है।

मैं आगे मृत्युनिष्ठा से घोषणा करता/करती हूं कि उक्त पूर्व वर्ष के दौरान कोई अन्य प्रभार्य ब्याज प्रत्यय संस्था को न तो प्रोचभूत या उपभूत हुआ था न ही उसने प्राप्त किया था।

मैं आगे घोषणा करता/करती हूं कि-----के रूप में अपनी हैसियत से मैं यह विवरणी बनाने के लिए और प्रत्यय संस्था की ओर से इसका सत्यापन करने के लिए सक्षम हूं।

तारीख-----
स्थान-----

हस्ताक्षर-----

टिप्पण :—

1. इस विवरणी पर प्रत्यय संस्था के प्रधान अधिकारी द्वारा और जहाँ किसी अनिवार्य प्रत्यय संस्था की दशा में किसी व्यक्ति को आय-कर अधिनियम 1961 की धारा 163 के अधीन उसका अधिकर्ता माना गया है वहाँ ऐसे व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षर किए जाने चाहिए।

2. सत्यापन पर हस्ताक्षर कर के पूर्व हस्ताक्षरकर्ता को अपना यह समाधान करना चाहिए कि यह विवरणी और उसके साथ के विवरण सही और सभी प्रकार से पूर्ण है। इस विवरण अथवा उसके साथ के विवरणों में मिथ कथन करने वाले कोई व्यक्ति ब्याज कर अधिनियम 1974 की धारा 24 के अधीन अधियोजन को दायी होगा और दोषगिद्धि पर कठोर कारावास से जिसकी अवधि तीन मास से कम की नहीं होगी न जो सात वर्ष तक की हो सकेगी। और जुर्माने से, दंडनीय होगा।

3. अनुपयुक्त शब्दों को काट दीजिए।

4. यदि इस विवरणी के आधार पर संवेय ब्याज कर अधिम रूप से संवेय ब्याज कर कम रकम में अधिक है तो ऐसा अधिक ब्याज कर और उसके साथ इस अधिनियम के किसी उपबंध के अधीन संवेय ब्याज इस विवरणी को देने के पूर्व संदेय किया जाना चाहिए और विवरण के साथ ऐसे ब्याज कर और कर के संवाय का सबूत होना चाहिए (धारा 9) (1).

5. संपरीक्षित लेखाओं की एक प्रति जल्दा परीक्षक की रिपोर्ट के प्रति के साथ संलग्न करें।

6. "प्रत्यय संस्था" से अभिप्रेत है—

(i) कोई बैंककारी कंपनी जिसे बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 19) लागू होता है (जिसके अंतर्गत उस अधिनियम की धारा 51 में निर्दिष्ट कोई बैंक या बैंककारी संस्था है ;

(ii) कंपनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) की धारा 4क में परिभाषित कोई लोक वित्तीय संस्थान,

(iii) राज्य वित्तीय निगम अधिनियम 1951 (1951 का 63) की धारा 3 या धारा 3क के अधीन स्थापित कोई राज्य वित्तीय निगम या धारा 46 के अधीन अधिसूचित कोई संस्था, और

(iv) कोई अन्य वित्तीय कंपनी।

“वित्तीय कंपनी” से अभिप्रेत है खंड (5क) के उपखंड (i) (ii) या उपखंड (iii) में निर्दिष्ट कंपनी से भिन्न कोई जो—

(i) अवक य वित्त कंपनी है अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अपने मुख्य कारबार के रूप में अवकय संयवहार या ऐसे संयवहार का वित्त घोषण करती है,

(ii) विनिधान कंपनी है अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अपने मुख्य कारबार के रूप में शेयर, स्टॉक, बंधपत्र, डिबेंचर, डिबेंचर स्टॉक अथवा सरकार या स्थानीय प्राधिकारी द्वारा निर्मित प्रतिभूतियों अथवा इसी प्रकार की अन्य विपण्य प्रतिभूतियों का अर्जन करती है

(iii) भ्रवास वित्त कंपनी है अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अपने मुख्य कारबार के रूप में मकानों के अर्जन या सन्निर्माण के जिसके अन्तर्गत उसके संबंध में भूमि का अर्जन या विकास है वित्त घोषण का कारबार कर करती है।

(iv) उधारदाता कम्पनी है, अर्थात् ऐसी कंपनी है (जो उपखंड (i) से उपखंड (iii) में निर्दिष्ट कंपनी नहीं है और जो अपने मुख्य कारबार के रूप में उधार या, अधिम देकर या अन्यथा वित्त उपलब्ध करने का कारबार करती है।

(v) पारस्परिक फायदा वित्त कंपनी है, अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अपने मुख्य कारबार के रूप में अपने सदस्यों से निक्षेपों का प्रतिग्रहण करने का कारबार करती है और जो केन्द्रीय सरकार द्वारा कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 620क के अधीन निधि या पारस्परिक फायदा सोसायटी घोषित की गई है;

(vi) अवशिष्ट कैर-बैंककारी कंपनी है (जो उपखंड (i), (ii), (iii), (iv) या (v) में निर्दिष्ट वित्तीय कंपनी से भिन्न है) अर्थात् ऐसी कंपनी है जो किसी स्कीम या ठहराव के अधीन, चाहे वह किसी भी नाम से ज्ञात हो, अभिदायों या अभिदानों के रूप में अथवा यूनिटों या प्रमाणपत्रों या अन्य लिखतों के विक्रय द्वारा या किसी अन्य रीति से एक मुक्त राशि में या किरतों में कोई निक्षेप प्राप्त करती है या

(vii) प्रकीर्ण वित्त कंपनी है अर्थात् ऐसी कंपनी है जो अनन्यतः या लगभग अनन्यतः पूर्ववर्ती उपाबन्धों में निर्दिष्ट दो या अधिक वर्गों का कारबार करती है।

7. (i) “व्याज” से भारत में दिए गए उधार और अधिमों पर व्याज अभित है और इसके अंतर्गत है—

(क) भारत में उपयोग के लिए संग्रूर किए गए किसी प्रत्यय के अनुपयोजित भाग पर प्रतिबद्धता प्रसार, और

(ख) भारत में लिखे गए बंधनपत्र और विनिमय पत्र पर बट्टा। किन्तु इसके अंतर्गत नहीं है—

(i) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 42 का उपधारा (1ख) में विनिर्दिष्ट व्याज,

(ii) राज ढुडियों पर बट्टा।

(ii) व्याज कर अधिनियम के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, किसी पूर्व वर्ष में किसी प्रत्यय संस्था का प्रभाय व्याज (अन्य प्रत्यय संस्थाओं को या किसी ऐसी सरकारी सोसायटी को, जो बैंककारी का कारबार करने में लगी हुई है दिए गए उधारों और अधिमों पर व्याज से भिन्न) व्याज की वह कुल रकम होगी जो उस पूर्व वर्ष में उस प्रत्यय संस्था को प्रोद्भूत या उद्भूत होती है

परन्तु व्याज कर अधिनियम की धारा 43 घ में निर्दिष्ट हूवने या शंकास्पद श्रृणों के प्रवर्णों के संबंध में कोई व्याज, प्रत्यय संस्था को उस पूर्व वर्ष में जिसमें वह प्रत्यय संस्था द्वारा उस वर्ष के लाभ और हानि लेखा में जमा किया जाता है या यथास्थिति, जिसमें वह प्रत्यय संस्था द्वारा वास्तव में प्राप्त किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रोद्भूत या उद्भूत हुआ समझा जाएगा।

(iii) पूर्व वर्ष के लिए प्रभाय व्याज की संगणना करने में उस पूर्व वर्ष में निर्धारित की प्रोद्भूत या उद्भूत होने वाले (प्रत्यय संस्थाओं को दिए गए उधारों और अधिमों पर व्याज से भिन्न) व्याज की कुल रकम ऐसे व्याज की उस रकम की कटौती श्रुजात की जाएगी जिसके बारे में यह साबित कर दिया गया है कि वह पूर्व वर्ष के दौरान डूबन्त श्रृण हो गई है।

परन्तु यह तब जब कि ऐसा व्याज किसी पूर्ववर्ती पूर्व वर्ष के लिए निर्धारित के प्रभाय व्याज क संगणना करने में हिसाब में लिया गया है और उस रकम को उस पूर्व वर्ष के लिए जिसके दौरान उसका डूबन्त श्रृण होना साबित किया गया है निर्धारित के लेखाओं में अवसूल नाय रकम के रूप में लिया गया है।

(ख) प्ररूप सं. 7 के टिप्पण के पैरा 3 में—

(1) अंक “50” के स्थान पर अंक “51” और

(2) अंक “41” के स्थान पर पद “4क” रखे जाएंगे।

[सं. 9371/फा.सं. 153/10/93-टी.पी.एल.]

डी.पी. सेमवाल, अवर सचिव

वाद टिप्पण :—व्याज कर नियम, 1974 जो तत्पश्चात समय-समय पर संशोधित किय गए और अन्त में का.आ.सं. 652 (अ) तारीख 31-8-1992 द्वारा अधिसूचित किय गए थे।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

Central Board of Direct Taxes

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th September, 1993

INTEREST-TAX

S.O. 685 E).—In exercise of the powers conferred by section 27 of the Interest-tax Act, 1974 (45 of 1974), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Interest-tax Rules, 1975, namely:—

1. (1) These rules may be called the Interest-tax (Amendment) Rules, 1993.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Interest-tax Rules, 1974, in the Appendix,—

(a) for the existing Form No. 1, the following form shall be substituted, namely:—

Form No. 1

INTEREST-TAX

RETURN OF CHARGEABLE INTEREST

See Section 7 of the Interest-tax Act, 1974 and Rule 3 of the Interest-tax Rules, 1974 For use in Income-tax Office

Name and office address in block letters Permanent Account Number

Ward/Circle/Special Range where assessed/assessable

Telephone

Assessment Year

Whether this is a revised return. If so, state the receipt no. and date of previous return.

State whether resident or non-resident

PART-I STATEMENT OF CHARGEABLE INTEREST

Rs.

1. Interest on loans and advances made in India [See Sl. No. 7(i) and (ii) of Notes]
2. Less : Interest which is established to have become bad debt [See Sl. No. 7 iii) of Notes]
3. Chargeable Interest (1—2)
4. Chargeable Interest as rounded off to the nearest multiple of ten rupees Section 288A of the Income-tax Act as applied to section 21 of the Interest-tax Act)

PART-II STATEMENT OF INTEREST-TAX:

1. Tax on chargeable interest —.....
2. Add :
 - (a) Interest for late filing of return (Section 12)
 - (b) Interest for default in payment of advance tax (Section 12A)
 - (c) Interest for deferment of advance tax payment (Section 12B)
3. Total tax and interest payable (1+2)
4. Advance tax paid:

	1st Instal- ment	2nd Instal- ment	3rd Instal- ment	Total
Amount (Rs.)				
Date				

5. Tax on self-assessment :

Date of payment	Interest-tax (Rs.)	Interest out of Sl. No. 2 above (Rs.)	Total (Rs.)

6. Total tax and interest paid (4+5) Rs.....

7. Tax/Interest payable or refundable (3— 6) Rs.....

PART-III OTHER SUMS NOT INCLUDED IN CHARGEABLE INTEREST AND CLAIMED TO BE NOT TAXABLE

Particulars	Amount (Rs.)	Reason why not taxable

VERIFICATION

I—son/daughter /wife of—
(name in full and block letters)

being the—of—
(designation) (name of the credit institution)

solemnly declare that to the best of my knowledge and belief the information given in this return and the statement accompanying it are correct and complete and that the amount of chargeable interest and other particulars shown therein are truly stated and relate to the previous year relevant to the assessment year commencing on the 1st day of April, 19 . I further solemnly declare that during the said previous year no other chargeable interest accrued or arose to or was received by the credit institution.

I further declare that in my capacity as—I am
(designation)

competent to make this return and verify it on behalf of the credit institution.

Date— Signature—

Place:—

Notes :

1. This return should be signed by the principal officer of the credit institution or where the case of a non-resident credit institution any person has been treated as its agent under section 163 of the Income-tax Act, 1961 by such person.

2. Before signing the verification the signatory should satisfy himself that this Return and the accompanying statements are correct and complete in all respects. (Any person making a false statement in this return or the accompanying statements shall be liable to prosecution under section 24 of the Interest-tax Act, 1974, and on conviction be punishable with rigorous imprisonment for a term which shall not be less than three months but which may extend to seven years and with fine).

3. Delete inappropriate words.

4. If the interest-tax payable on the basis of this return exceeds the amount of interest-tax paid in advance, such excess interest-tax together with interest payable under any provision of this Act must be paid before furnishing of the return and the return shall be accompanied by proof of payment of such interest-tax and interest [Section 9(1)].

5. "Attach a copy of the audited accounts along with a of the auditors report.

6. "Credit institution" means,—

- (i) a banking company to which the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) applies (including any bank or banking institution referred to in section 51 of that Act);
- (ii) a public financial institution as defined in section 4A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956);
- (iii) a State financial corporation established under section 3 or section 3A or an institution notified under section 46 of the State Financial Corporations Act, 1951 (63 of 1951); and
- (iv) any other financial company:

"Financial Company" means a company, other than a company referred to in sub-clause (i), (ii) or (iii) of clause (5A), being—

- (i) a hire-purchase finance company, that is to say, a company which carries on, as its principal business, hire purchase transactions or the financing of such transactions;
- (ii) an investment company, that is to say, a company which carries on, as its principal business, the acquisition of shares, stock, bonds, debentures, debentures stock, or securities issued by the Government or a local authority, or other marketable securities of a like nature;
- (iii) a housing finance company, that is to say, a company which carries on, as its principal business the business of financing of acquisition or construction of houses, including acquisition or development of land in connection therewith;
- (iv) a loan company, that is to say, a company not being a company referred to in sub-clauses (i) to (iii) which carries on, as its principal business, the business of providing finance, whether by making loans or advances or otherwise;
- (v) a mutual benefit finance company, that is to say, a company which carries on, as its principal business, the business of acceptance of deposits from its members and which is declared by the Central Government under section 620A of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), to be a Nidhi or Mutual Benefit Society;
- (vi) a residuary non-banking company (other than a financial company referred to in sub-clause (i), (ii), (iii), (iv) or (v), that is to say, a company which receives any deposit under any scheme or arrangement, by whatever name called, in one lump sum or in instalments by way of contributions or subscriptions or by sale of units or certificates or other instruments or in any other manner; or

(vii) a miscellaneous finance company, that is to say a company which carries on exclusively, or almost exclusively, two or more classes of business referred to in the preceding sub-clauses.

7. (i) "Interest" means interest on loans and advances made in India and include:—

- (a) commitment charges on unutilised portion of any credit sanctioned for being availed of in India; and
- (b) discount on promissory notes and bills of exchange drawn or made in India, but does not include—
 - (f) interest referred to in sub-section (1B) of section 42 of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934);
 - (II) discount on treasury bills.

(ii) Subject to the provisions of the Interest-Tax Act, the chargeable interest of any previous year of a credit institution shall be the total amount of interest (other than interest on loans and advances made to other credit institutions or to any cooperative society engaged in carrying on the business of banking) accruing or arising to the credit institution in that previous year:

Provided that any interest in relation to categories of bad or doubtful debts referred to in section 43D of the Income-tax Act shall be deemed to accrue or arise to the credit institution in the previous year in which it is credited by the credit institution to its profit and loss account for that year or, as the case may be, in which it is actually received by the credit institution whichever is earlier.

(iii) In computing the chargeable interest of the previous year, there shall be allowed from the total amount of interest (other than interest on loans and advances made to credit institutions accruing or arising to the assessee in the previous year, a deduction in respect of the amount of interest which is established to have become a bad debt during the previous year:

Provided that such interest has been taken into account in computing the chargeable interest of the assessee of an earlier previous year and the amount has been written off as irrecoverable in the accounts of the assessee for the previous year during which it is established to have become a bad debt.

(b) In Form No. 7, in the Notes, in Paragraph 3,—

- (1) for the figure "50" the figure "51" and
- (2) for the figure "41" the expression "4A"

shall be substituted.

[No. 9371/F. No. 153/10/93-TPL]
D.P. SEMWAL, Under Secy.

Foot Note : Interest-Tax Rules, 1974, which were subsequently amended from time to time, were last notified vide S.O. No. 652 (F) dated 31-8-1992.

